

निजनाम श्री जी साहिब जी, अनादि अछरातीत ।
 सो तो अब जाहेर भए, सब विध वतन सहीत ॥१॥
 श्री स्यामाजी वर सत्य हैं, सदा सत सुख के दातार ।
 विनती एक जो वल्लभा, मो अंगना की अविधार ॥२॥
 वानी मेरे पिउकी, न्यारी जो संसार ।
 निराकार के पार थें, तिन पार के भी पार ॥३॥
 अंग उत्कण्ठा उपजी, मेरे करना एह विचार ।
 ए सत वानी मथ के, लेउँ जो इन को सार ॥४॥
 इन सार में कई सतसुख, सो मैं निरने करूँ निरधार ।
 ए सुख देउँ ब्रह्मसृष्ट को, तो मैं अंगना नार ॥५॥
 जब ए सुख अंग में आवहीं, तब छूट जाए विकार ।
 आयो आनन्द अखण्ड घर को, श्रीअछरातीत भरतार ॥६॥

महामत कहे ए मोमिनो, ए साथी सेवा के ।
 कहों केता अजूं बहुत हैं, जिन प्यारे चरन धनी के ॥२०

प्रकरण । ॥७२॥ चौपाई । ॥४३५२॥

गरमी के दिनों में, सब सेवा खुसबोए ।
 अतर खरीद सब जात के, आवे तुंग भरे गुलाब के सोए ॥१॥

अगर चोवा खस खाना, करें सेवा गंगाराम ।
 खसबोय खाना सब रखत हैं, एही खरीद करें इस ठाम ॥२॥

खस खाना बनावत, टटियां अपने हाथ ।
 छप्पर छांटे भली भांत सों, छिटकत पानी साथ ॥३॥

टटियां बांधने को, एक ओका गंगा राम ।
 सेवा कृष्णदास दयाल, रहे महम्मद खां इन काम ।।४
 फते महम्मद आवत, खड़ा करन खस खान ।
 बंगले के बीच में, सब सेवा करें समान ।।५
 काम बढ़ई का पड़े, रहे मोहन हीरा मन ।
 सुतरी डोरी ल्यावन को, बूल चन्द मोहन ।।६
 बांस कमचिँएँ ल्यावत, पुरबीए खोज पर ।
 समारने बांसन को, जग्गू वीर जी बुलावने पर ।।७
 लाल खारुआ चाहिए, ल्यावत है नारायन ।
 बनाए के ठाढ़ी करें, पोंढ़त है सुभान ।।८
 जल छिरकत सब बंगले, उठाए सब बिछौनें ।
 इनाएत खां भगवान, गंगाराम सेवें इनमें ।।९
 बिछौने वाले बिहारीदास, सब साथ दौड़े इन काम ।
 वीरजी मोदी जल छिरकत, कर राज की पहिचान ।।१०
 नन्दराम पखाले मंगावत, आखर बल्लभ इत छिरकत ।
 तर करें जिमी को, गरमी न फरकत ।।११
 वाओ ढोले इत हजूरी, खड़े रहें इक पाये ।
 बिहारी वाओ ढोलत, कबूं गंगादास इत आए ।।१२

संकर हाथ में रहत हैं, हमेसा ही बिजने ।
 जब महाराजा आवत, वाओ ढोलें इन समें ।।१३
 और साथी सब ढोलत, जहां लग पौढ़त श्री राज ।
 चार जने इत खड़े रहें, बल्लभ संकर एही काज ।।१४
 गंगादास गंगाराम, और बिहारीदास ।
 सन्त दास सेवन में, खड़े रहें ए खास ।।१५
 और साथी भी सेवन को, खड़े रहें सदा सनमुख ।
 जिनों सुख लिया इन समें, कह्यो न जाए इन मुख ।।१६
 इन सेवा मिने पहिले, रहते निरमल दास ।
 ता पीछे प्रेमदास नें, सेवा करी जो खास ।।१७
 लाल मुकुन्ददास रहत हैं, निरमल दास के संग ।
 गोविन्द दास सूरती, मगन सेवत सर्वा अंग ।।१८
 जमुना मानक इन समें, रहें हजूर सेवा में ।
 राम बाई आखर में, ए सबे हुई बल्लभ सें ।।१९
 हकीकत खां भेजत है, गुलाब के सीसे ।
 छिरकत हैं सब सेज पर, गंगाराम इन समें ।।२०
 मिहीं वस्तर पहिनन के, प्रेमदास ल्यावे ।
 आखर को इन पे, नन्दराम पासे जावे ।।२१

आई फेर बल्लभ पास, यापे सब सेवा को बोझ ।
बहुत मेहनत इन करी, सब सेवा की खोज ।।२२

महावजी भाई इन समें, आए पोरबन्दर से ।
सेवा अनार राखवे की, और पत्री लिखवे की सेवा में ।।२३

आसबाई इन समें, लागत हैं चरन ।
श्री राज हेत कर बुलावत, प्रसन्न होए के मन ।।२४

महामत कहें सैयन को, ए सेवा के कहे साथ ।
इहां तेही खड़े रहे, जाके धनीएं पकड़े हाथ ।।२५

प्रकरण ।।७३।। चौपाई ।।४३७७।।

कुल प्रकरण-७३, कुल चौपाई ४३७७

श्री बितक साहेब ग्रन्थ में,
जो खोजे चित लाए ।
हृद बेहृद पर धाम लों,
आत्म दृष्टि लखाए ॥१॥

श्री बितक साहेब ग्रन्थ को,
जो करे नित विचार ।
आत्म जाग्रत होवहीं,
खुले धाम के द्वार ॥२॥

श्री बितक साहेब ग्रन्थ को,
नित सेवे जो कोए ।
पूरण प्रेम जो उपजे,
सत्वर दरसन होए ॥३॥

श्री बितक साहेब ग्रन्थ को,
पढ़ पढ़ाव कोए ।
धाम रास बृज जागनी,
मिले इच्छित सुख सोए ॥४॥

श्री बितक साहेब ग्रन्थ को,
जो करहीं नित पाठ ।
अहनिस युगल सख्य सों,
खेले सातों घाट ॥५॥

श्री बितक साहेब ग्रन्थ को,
सेवे आठो जाम ।
उन सब सुन्दर साथ को,
करुं दण्डवत प्रणाम ॥६॥

ज्यारे धणी धणवट करे, त्यारे बल वेरी ना हरे ।
वली गया काम सराडे^१ चढे, मन चितव्या कारज सरे ॥१७॥

दर्ई प्रदखिणा अति घणी, करूं दंडवत परणाम ।
सहु साथना मनोरथ पूरजो, मारा धणी श्री धाम ॥८३॥
मनना मनोरथ पूरण कीधां, मारा अनेक वार ।
वारणे जाय इंद्रावती, मारा आतमना आधार ॥८४॥